Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

सिकंदर

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।

सिकंदर	***Sikandar***
प्लूटार्क	**Plutarch**
हिंदी अनुवाद	***Hindi Translation***
वंदना शर्मा	**Vandana Sharma**
पुस्तकमाला संपादक	***Series Editor***
तापोश चक्रवर्ती	**Taposh Chakravorty**
कॉपी संपादक	***Copy Editor***
राधेश्याम मंगोलपुरी	**Radheshyam Mangolpuri**
रेखांकन	***Illustration***
अरविंदर चावला	**Arvinder Chawala**
कवर एवं ग्राफिक्स	***Cover & Graphics***
जगमोहन	**Jagmohan**
प्रथम संस्करण	***First Edition***
नवंबर, 2007	**November, 2007**
सहयोग राशि	***Contribuation***
20 रुपये	**Rs. 20**
मुद्रण	***Printing***
आकृष्ट ग्राफिक्स	**Aakrisht Graphics**
गुड़गांव	**Gurgaon**

Publication and Distribution
© Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket , New Delhi - 110 017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
website: www. bgvs.org

BGVS NOVEMBER 2007 2K 0020 NJVA 0084/2007

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

सिकंदर

(356-323 ईसा पूर्व)

एक 11 साल लंबी अद्‌भुत विजय यात्रा में मेसिडोनिया का नौजवान सिकंदर मिस्र से भारत तक विजय प्राप्त करता चला गया। उसके पीछे-पीछे ग्रीक संस्थाएं और ग्रीक भाषा आईं, जो प्राचीन विश्व का मानदंड बन गईं। सत्ता के नशे ने सिकंदर को अपने दोस्तों से दूर कर दिया और उसे सुखद अंत नसीब नहीं हुआ।

मेरी मंशा इतिहास लिखने की बजाय जिंदगी के बारे में लिखने की है। कई बार छोटी-छोटी घटनाएं हमें एक व्यक्ति के बारे में ऐसी सच्चाई बता देती हैं जो महान कारनामे भी नहीं बता सकते हैं। जैसे तस्वीर बनाने वाला अपना सारा ध्यान शरीर की बजाय चेहरे पर केंद्रित कर देता है, (क्योंकि ठीक ही कहा जाता है कि चेहरा व्यक्तित्व का आईना होता है) उसी तरह मुझे भी अपना ध्यान खासतौर से व्यक्ति की आत्मा की ओर लगाने की इजाजत होनी चाहिए। इस तरह ऐतिहासिक घटनाक्रम में उसके योगदान की बजाय मैं उसकी जिंदगी के बारे में बात करने की कोशिश करूंगा। ऐतिहासिक वृत्तांत बताने का काम मैं दूसरों पर छोड़ता हूं।

जिस दिन सिकंदर पैदा हुआ, इफेसस में डायाना के मंदिर (यह मंदिर प्राचीन विश्व के सात अजूबों में से एक है) में आग लग गई। पूर्व के भविष्यवक्ताओं ने इस शकुन की व्याख्या करते हुए कहा, एशिया को नष्ट करने वाली ताकत पैदा हो गई है।

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

सिकंदर का रंग गोरा था, बाल लाल थे और आंखें पनीली नीली थीं। एक भीनी स्वाभाविक-सी, मीठी-सी खुशबू उसके शरीर से आती रहती थी, जो उसके कपड़ों को भी महका देती थी।

सिकंदर जिंदगी से करतब और गौरव चाहता था, न कि आराम और संपत्ति। शोहरत में उसकी जान बसती थी। जब उसने अपने पिता राजा फिलिप (जो कि मेसिडोनिया के राजा थे) की विजय-गाथाएं सुनीं, तो वह (सिकंदर) उत्तराधिकार में ज्यादा संपत्ति और ताकत पाकर खुश होने की बजाय यह सोचकर उदास था कि उसके जीतने के लिए काफी कम बचेगा। वह अक्सर अपने दोस्तों के सामने अपना दुःख प्रकट करता रहता था कि जब तक वह राजा बनेगा तब तक कुछ करने को बचेगा ही नहीं।

सिकंदर ऐसे राज्य का राजा बनना चाहता था, जो मुसीबत और लड़ाइयों से घिरा हो, ताकि उसे अपना जोश और क्षमता आजमाने-दिखाने का मौका मिले और वह इतिहास पर अपनी छाप छोड़े। उसे अपने लिए आराम की जिन्दगी पसंद नहीं थी। यह नौजवान योद्धा कलाप्रेमी था और सीखने की अदम्य इच्छा रखता था। उसे शिकार और युद्धकला बहुत पसंद थी। वह इन्हें बहुत प्रोत्साहित करता था। उसे मुक्केबाजी बिल्कुल पसंद नहीं थी।

x x x x

बुसिफेलस सिकंदर का घोड़ा था, जो उसके ज्यादातर कामों में उसके साथ था। कुछ घोड़े के व्यापारी इस शानदार जानवर को राजा फिलिप के पास बेचने के लिए आए थे, परन्तु कोई आदमी उसे काबू में नहीं कर सका तो वापस लेकर जाने लगे। सिकंदर ने व्यंग्य में कहा, "शर्म की बात है कि इतने शानदार घोड़े को इसलिए खोना पड़ेगा कि कोई उसको ठीक तरीके से साधना नहीं जानता।" फिलिप ने पहले तो लड़के की बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन सिकंदर अड़ा रहा। आखिरकार फिलिप ने कहा, ''क्या तुम अपने से बड़े लोगों को यह दिखाना चाहते हो कि तुम्हीं लायक हो और तुम्हीं ज्यादा जानते

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

हो?" सिकंदर ने साहस से भरकर कहा, ''हां, मैं सवारी कर सकता हूं।'' इस पर सब हंस पड़े। उसने घोड़े की कीमत की शर्त लगाई और उसे आजमाने का मौका पा लिया।

सिकंदर ने समझ लिया कि बुसिफेलस अपनी ही परछाई से डरता है। इसलिए उसने घोड़े का मुंह सूरज की तरफ कर दिया और आराम से बैठा दिया। फिर उसी दिशा में थोड़ा-सा चलाया। जब भी वह डरता या बेचैन होता, सिकंदर उसे प्यार से थपथपा देता। अचानक सिकंदर कूदकर उसकी पीठ पर चढ़ गया और मजबूती से लगाम खींची जब तक कि उसका बागीपना चला नहीं गया। फिर उसने बुसिफेलस को पूरी रफ्तार से भागने दिया और अपनी आदेशपूर्ण आवाज में उसको नियंत्रित करता रहा।

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

सिकंदर के पिता और दूसरे लोग घबराहट से भरे रहे जब तक कि उन्होंने सिकंदर को घोड़े पर उत्साह से भरे वापस आते न देख लिया। राजा फिलिप ने आंखों में आंसू भरकर कहा, ''ओह मेरे बेटे, तुम अपने व्यक्तित्व के अनुरूप और अपने लायक राज्य बनाओ, मेसिडोनिया तुम्हारे लिए बहुत छोटा है।''

इसके बाद फिलिप ने अरस्तू को सिकंदर का शिक्षक बनने के लिए बुलाया। (अरस्तू प्लेटो के शिष्य थे और अपने समय के मशहूर विचारक थे। उन्होंने तर्क, राजनीतिक सिद्धांत और प्राकृतिक विज्ञान पर बहुत काम किया है।) साधारण शिक्षक सिकंदर के लिए काफी नहीं होता, क्योंकि सिकंदर तर्क के सिवा और किसी चीज से काबू में नहीं हो सकता था। हर तरीके की चीजों को पढ़ने और सीखने में उसकी रुचि थी, लेकिन होमर की इलियड उसकी पसंदीदा पुस्तक थी। (इलियड पुस्तक योद्धाओं में हमेशा पसंद की जाती थी। किस्सा यूं है: ट्रॉय पर कब्जे के नौवें साल में कुछ हफ्ते पहले जब एकिलिस– जो सिकंदर की ही तरह एक मजबूत और बड़ा योद्धा था– ने अपना बहुत अच्छा दोस्त युद्ध में खो दिया, तो उसने दुश्मन से भयंकर बदला लिया। आज भी पुरातत्व खोज बताती है कि ट्रॉय सचमुच में था और जैसा होमर ने बताया है, उतना ही बड़ा था।) सिकंदर जब भी अपने युद्ध पर निकलता हमेशा अपने साथ अरस्तू की टिप्पणियों से भरी पुस्तक इलियड को साथ में लेकर निकलता। अरस्तू का उसपर बहुत गहरा प्रभाव था और वह कहता था कि वह अरस्तू को अपने पिता फिलिप जितना प्यार करता है। उसके पिता ने उसे जीवन दिया और शिक्षक ने उसे जीना सिखाया।

x x x x

जब सिकंदर 16 साल का था, फिलिप ने उसे मेसिडोनिया का शासन सौंप दिया और खुद बिजैण्टियम को जीतने के लिए चल पड़ा। मैयदी लोगों ने विद्रोह कर दिया। सिकंदर ने उनके सबसे बड़े शहर पर चढ़ाई करके उसे हरा दिया और शहर का नाम बदलकर अपने नाम पर 'अलेक्सजेण्डरोपोलिस' रख दिया।

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

फिलिप ने कोरोनिया की लड़ाई में सिकंदर को घुड़सवार सेना का सेनापति बना दिया। सिकंदर ने थीब्स के पवित्र जत्थे को तोड़ने का काम किया। कोरोनिया की लड़ाई में (338 ई.पूर्व) राजा फिलिप मेसिडोनिया का राजा था, वह एथेन्स और उसके सहयोगियों को हराकर ग्रीस का राजा बन गया। इस शुरुआती बहादुरी ने पिता को सिकंदर का इतना प्रशंसक बना दिया कि उसको यह सुनना पसंद था कि फिलिप उनका जनरल है और सिकंदर उनका राजा है।

सिकंदर की मां ओलिमपियास के साथ फिलिप की जिंदगी बड़ी तूफानी थी। फिलिप ने एक बार उसकी निगरानी की और उसके बिस्तर पर सांप देखा। उसके बाद वे एक-दूसरे के लिए अजनबी हो गए। फिलिप की नई शादी ने ओलिमपियास को क्रोध से भर दिया और वह आक्रामक, ईर्ष्यालु और कभी माफ न करने वाली बन गई। महिलाओं में कुछ समस्या चल रही है, यह बात आग की तरह पूरे राज्य में फैल गई। ओलिमपियास ने सिकंदर तक को अपने पिता के खिलाफ कर दिया।

उनके संबंध टूटने की नौबत तब आई जब फिलिप ने एटेलस की जवान भतीजी क्लीयोपेत्रा से शादी कर ली। शादी की दावत में एटेलस (जो नशे में था) जाम टकराते हुए मेसिडोनियावासियों को भगवान से प्रार्थना करने को कहा कि उसकी भतीजी राज्य का उत्तराधिकारी पैदा करे। सिकंदर इससे इतना चिढ़ गया कि उसने कप एटेलस की तरफ फेंका और कहा, "मैं क्या हूं तब? एक नाजायज औलाद?" फिलिप ने भी बहुत पी रखी थी। उसने एटेलस का पक्ष लिया और सिकंदर के पास तलवार खींचकर आ रहा था कि फिसलकर फर्श पर गिर गया। सिकंदर अपने शराबी और फूहड़ पिता का मजाक उड़ाते हुए अपनी मां ओलिमपियास के साथ मेसिडोनिया छोड़कर चला गया।

परिवार का एक पुराना मित्र फिलिप से मिलने आया। फिलिप ने उससे पूछा, "यूनानी लोग आपस में शांति से हैं?" आने वाले ने जवाब

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

दिया, "बड़ी हैरानी की बात है कि तुम्हें यूनान की शांति की चिन्ता है, जबकि तुम्हारा अपना घर इतनी लड़ाइयों से घिरा है।" फिलिप इशारा समझ गया और उसने सिकंदर को घर बुला भेजा। जल्दी ही ऐसा कुछ हुआ कि उन दोनों के बीच फिर से दरार पड़ गई।

अब तक फिलिप को दूसरी पत्नी से एक पुत्र प्राप्त हो चुका था। इसका नाम अरिहदयास था। वह स्वस्थ बच्चा था, लेकिन ओलिमपियास ने कुछ दवाएं दे-देकर उसके मस्तिष्क को विकृत कर दिया। कारिया के राज्यपाल ने अपनी लड़की का अरिहदयास के साथ विवाह का सुझाव दिया ताकि फिलिप से रिश्तेदारी हो जाए। ओलिमपियास ने सिकंदर के कुछ सलाहकारों को साथ लेकर सिकंदर के दिमाग में शक भर दिया कि इस तरह फिलिप अरिहदयास को उत्तराधिकारी बना देगा। सिकंदर ने एक अभिनेता थिसालस को राज्यपाल के पास यह हिदायत देकर भेजा कि अरिहदयास की बुराई करके उससे कहे कि अपनी लड़की की शादी सिकंदर से कर दे।

निःसंदेह राज्यपाल उसकी जगह सिकंदर को दामाद के रूप में पाने की बात सुनकर ज्यादा प्रसन्न हुआ। फिलिप को सिकंदर के प्रस्ताव का पता लगा। उसने काफी जोर देकर सिकंदर को बताया कि वह जो सत्ता उत्तराधिकार में हासिल करने जा रहा है उसके लिए यह उपयुक्त नहीं होगा कि वह एक ऐसे शख्स से उसकी बेटी का हाथ मांगे जिसकी हैसियत एक असभ्य राजा के गुलाम से ज्यादा नहीं हो। फिलिप ने थिसालस को जंजीरों से बंधवा कर वापस भेजवा दिया और सिकंदर के कुछ साथियों को, जिन्होंने उसके दिमाग में ऐसा विचार डाला था, देश-निकाला दे दिया। थोड़े ही समय बाद फिलिप को मार डाला गया। हत्यारा पौसानियस था जो फिलिप से इस बात से नाराज था कि एटेलस से चोट खाने के बाद जब वह न्याय मांगने फिलिप के पास गया तो फिलिप ने अपनी पत्नी के प्रभाव और सिखावे में आकर न्याय करने से इंकार कर दिया। ओलिमपियास ने उसका फायदा उठाया और अपने पति से बदला लेने के लिए पौसानियस को हथियार

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

बना लिया। जैसे ही फिलिप रास्ते से हटा, ओलिमपियास ने अपने सबसे ज्यादा नफरत की पात्रा जवान क्लीयोपेत्रा को मार दिया।

तो इस तरह मात्र 20 साल की उम्र में सिकंदर मेसिडोनिया का राजा बन गया।

पड़ोसी राज्यों ने और यूनान के शहरों ने जब एक जवान को राजा के तौर पर देखा तो उन्होंने मेसिडोनियन शासक के खिलाफ बगावत कर दी। सिकंदर के वजीर ने सलाह दी कि वह यूनानियों को अधीन करने पर ध्यान लगाना छोड़कर उत्तर के असभ्य देशों को अपने प्रभाव में लाने के लिए अपनी ताकत लगाए। उसने कहा, "यूनानियों के साथ दया से पेश आओ, इससे बगावत की पहली कोशिश कमजोर हो जाएगी।"

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

लेकिन सिकंदर ने इस सलाह को खारिज कर दिया। उसका मानना था कि अगर शुरू में ही शासन की तरफ से कोई कमजोरी नजर आएगी तो हरेक को हमला करने की हिम्मत होगी, इसलिए बहादुरी में ही सुरक्षा है। पहले सिकंदर ने दानुबी नदी के इलाकों पर चढ़ाई की और सारी विरोधी ताकतों को (जो आदिवासी थीं सबको) कब्जे में कर लिया। जब वहां सब कुछ शांत हो गया तो उसने दक्षिण की तरफ रुख किया और यूनान की तरफ चल पड़ा।

थीब्स में क्रांति हुई थी। वहां के उत्तेजक भाषणकर्ता दूसरे सब यूनानियों को प्रेरित कर रहे थे कि मेसिडोनियन शासन के खिलाफ खड़े हों। एथेंस के लोग लड़ाई और विद्रोह की बातों से बहुत उत्तेजित हो रहे थे, खासतौर से डेमोस्थेनिस के उत्तेजक भाषणों से।

दो हफ्ते की यात्रा के बाद सिकंदर थीब्स के बाहर पहुंचा और विद्रोहियों के दो नेताओं को बाहर आने का हुक्म दिया। सिकंदर ने पहले अपनी दयालुता दिखाते हुए कहा कि जो हुक्म मानेंगे उनको वह पूरी तरह माफ कर देगा। लेकिन थीबनों ने बदतजीमी-भरा नकारात्मक जवाब दिया। इस पर सिकंदर नाराज हो गया और उसने 6 हजार लोगों को मार डाला, शहर को तबाह कर दिया और बचे हुए निवासियों को गुलामों के तौर पर बेच दिया।

इस भयंकर उदाहरण ने बाकी यूनानियों को भी विद्रोह करने के फैसले से निकले परिणाम पर सोचने के लिए मजबूर कर दिया। हुक्म नहीं मानने पर क्या परिणाम होगा, वे यह भी सोचने पर मजबूर हो गए। उसके तुरंत बाद एथेंसवासियों ने खेद प्रकट करते हुए मेसिडोनिया के साथ अपने सहयोग को दोहराया। सिकंदर की एथेंसवासियों के प्रति नई दयालुता उसकी थीब्स के साथ पहले की क्रूरता का पछतावा थी या खून के लिए उसका मोह कुछ कम हो चला था, यह अभी तय नहीं है। हालांकि उसके बाद सिकंदर को जो भी थीब्सवासी मिला, उसने उसके साथ दयालुता दिखाई।

इसके फौरन बाद यूनानियों के प्रतिनिधि कोरिन्थ शहर में इकट्ठा

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

हुए और सिकंदर को ईरान के खिलाफ लड़ाई की अगुवाई करने के लिए अपना नेता चुना। ईरान के खिलाफ एक सर्वयूनानी लड़ाई लड़ने का सपना कुछ समय से था। सिकंदर जब कोरिन्थ में था, तमाम दार्शनिक और राजनीतिज्ञ उससे मिलकर मुबारकबाद देने के लिए आए। लेकिन मशहूर दार्शनिक डियोजिनिस, जो कोरिन्थ में रहता था, उससे मिलने नहीं आया।

इसलिए सिकंदर डियोजिनिस से मिलने उसके घर गया और उसे धूप स्नान करते हुए जमीन पर लेटे देखा। डियोजिनिस ने अपने-आपको जरा-सा ऊपर उठाया, जब उसने भीड़ का शोर सुना। सिकंदर ने बड़ी विनम्रता से दार्शनिक से पूछा, "क्या राजा आपके लिए कुछ कर सकता है?"

डियोजिनिस ने सिर्फ इतना कहा, "हां, कृपया अपनी परछाई से धूप मत रोको।" लौटती बार सिकंदर के साथी उस साधारण दिमाग के आदमी का मजाक बनाने लगे तो सिकंदर ने उनसे कहा, "अगर हंसना जरूरी है तो जरूर हंसो। लेकिन जान लो, अगर मैं सिकंदर न होता तो मैं डियोजिनिस बनना पसंद करता।"

x x x x

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

करीब 30-40 हजार की पैदल फौज और 3-4 हजार घुड़सवारों के साथ सिकंदर ने एशिया माइनर (334 ई.पू.) में प्रवेश किया। उसके पास सिर्फ 70 मुद्राएं बची थीं उनकी तनख्वाह के लिए, और मुश्किल से 30 दिन का राशन था। सिकंदर 200 मुद्राओं का कर्जदार हो गया था। वह अपना सब कुछ अपने सैनिकों और उनके परिवारों के रखरखाव पर खर्च कर चुका था। जब उसके जनरल ने उससे पूछा कि उसने अपने लिए क्या रखा है तो सिकंदर ने कहा, "मेरी उम्मीद।" इस जनरल ने यह सुनकर अपनी पेंशन लेने से इंकार कर दिया और सिकंदर से कहा, "आपका सिपाही आपकी उम्मीद में आपका भागीदार है।"

ऐसी इच्छाशक्ति और दृढ़निश्चय लेकर सिकंदर ने हेलेस्पोंड नदी को पार कर एशिया में प्रवेश किया और ट्रॉय में आया।

ट्रॉय में एकिलिस का मकबरा था, जो कि उसकी मां के पक्ष से उसका पूर्वज था। सिकंदर ने रिवाज के मुताबिक उसके मकबरे के पत्थर पर तेल लगाया और फिर अपने साथियों के साथ नंगा होकर उसकी परिक्रमा की। सिकंदर ने कहा, "एकिलिस सौभाग्यशाली था कि उसे अच्छा दोस्त मिला था। जब तक जीवित था अच्छा दोस्त रहा और उसके बाद अच्छा कवि बनकर उसकी याद को जीवित रखा।"

इसी दौरान ईरानियों ने ग्रेनिकस नदी के दूसरी तरफ सिकंदर को रोकने के लिए पड़ाव डाल दिया। ईरानी सेना में 20 हजार सिपाही और 20 हजार घुड़सवार थे। उनकी स्थिति अच्छी-खासी मजबूत थी। नदी गहरी थी और किनारे ऊंचे थे। हमला करना असंभव दीख रहा था। लेकिन सिकंदर एकदम 13 कुशल घुड़सवारों को लेकर तीरों की बौछार में चल पड़ा। आवेश और दृढ़ता के साथ वे दलदली किनारों को पार करने में सफल हो गए और शत्रु के काफी पास पहुंच गए।

सिकंदर अपनी सफेद कलंगी और चमकते जिरहबख्तर से आसानी से पहचाना जाता। सबसे बहादुर ईरानी उसके आसपास झुंड बना लेते और वहां लड़ाई और भी घातक हो जाती। एक ईरानी सरदार

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

ने अपने कुठार के हमले से सिकंदर को भौंचक्का कर दिया। लेकिन क्लिटस ने अचानक दुश्मन पर भाला फेंककर उसके वार को रोक लिया और सिकंदर की जान बच गई।

मेसिडोनिया का जत्था तबतक नदी पार करके दूसरी तरफ जम गया था। ईरानी उनके धक्के के सामने खड़े नहीं हो सके और जल्दी ही पूरी ईरानी फौज जान बचाकर भाग खड़ी हुई। ईरानी फौज को 20 हजार पैदल और ढाई हजार घुड़सवारों का नुकसान उठाना पड़ा, जबकि सिकंदर ने कुल 34 आदमी खोए।

इस पहली विजय ने सब कुछ बदल दिया। तटवर्ती इलाकों के सारे शहरों ने सिकंदर को समर्पण कर दिया, सिर्फ हेलीकारनासस और मिलिटस को छोड़कर। इन्हें सिकंदर को ताकत से लेना पड़ा।

अब सिकंदर के सामने एक मुश्किल निर्णय था– या तो अपनी ताकत को इकट्ठा करे ताकि बाद के कामों के लिए एक मजबूत आधार तैयार हो या फिर ईरानी राजा डेरियस, जो अपने साम्राज्य के

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

केन्द्र में बैठा था, पर एकाएक हमला कर दे। सारी ताकत को इकट्ठा करना सिकंदर का चुनाव था। इसलिए वह तटवर्ती इलाके की ओर चल पड़ा लाइसिया पर कब्जा करने के लिए, और फिर उत्तर की तरफ फिरिगिया की तरफ मुड़ा।

वहां गोरडियम शहर में उसने मशहूर गोरडियन गांठ को खोलने की चुनौती को स्वीकार किया। यह एक बहुत जटिल गांठ प्राचीन रथ के जुटे में बांधी हुई थी। यह कहा जाता था कि जो भी उस गांठ को खोल देगा वह विश्व का सम्राट बन जाएगा। सिकंदर ने बजाय उसके कि वह उसे खोलने में लगता, अपनी तलवार खींची और उस गोरडियन गांठ को सीधे काट डाला।

ईरान का राजा डेरियस सूसा शहर से अपनी 6 लाख की फौज के साथ आ रहा था। सिकंदर सिलिसिया में रुका जिसे डेरियस और उसके सलाहकारों ने सिकंदर का बड़ी ईरानी फौज देखकर डर जाना समझा। असली वजह थी सिकंदर की गंभीर बीमारी, जिसकी वजह से उसे देर हुई।

सिकंदर के सारे तीमारदार कोई भी दवा आजमाने से डर रहे थे, क्योंकि अगर उनका नुस्खा फेल हो जाता और सिकंदर मर जाता तो मेसिडोनिया के लोग चिकित्सक को ही जिम्मेदार ठहराते। लेकिन वहां एक था 'एकारनिया का फिलिप' जिसने हिम्मत की और अपनी जिंदगी दांव पर लगाकर सिकंदर की जान बचाई। सिकंदर को पारमेनियो से एक पत्र मिला, जिसमें उसे चिकित्सक से सावधान किया गया था और कहा गया था कि डेरियस ने चिकित्सक को रिश्वत देकर उसे दवा में जहर मिलाकर देने के लिए भेजा है। सिकंदर ने पत्र पढ़कर तकिये के नीचे रख दिया और किसी को नहीं दिखाया। जब फिलिप दवा की खुराक लेकर आया तो सिकंदर ने पत्र उसको दे दिया। जितनी देर में फिलिप ने उसे पढ़ा उतने समय में सिकंदर ने मुस्कराते हुए दवा पी ली। जल्दी ही वह ठीक हो गया।

ईरानियों ने खुले और चौड़े मैदान में पड़ाव डाला। जहां वे

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

घुड़सवारी की अपनी स्थिति का फायदा ले सकते थे। लेकिन हफ्ते बीतते गए और सिकंदर का कहीं आने का चिह्न न था (सिकंदर उस समय अपनी बीमारी से उबर रहा था)। डेरियस के प्रशंसकों ने उसे समझा दिया कि यूनानी लड़ने से डर रहे हैं, इसलिए डेरियस को अपनी सेना को इस्सस नदी पर उनका रास्ता रोकने के लिए लगा देना चाहिए। डेरियस ने ठीक उसी समय इस्सस की ओर चलना शुरू किया, जब सिकंदर उस पर हमला करने के लिए सीरिया की तरफ चल पड़ा। दोनों सेनाओं ने एक-दूसरे को पार किया। जब सिकंदर ने सुना कि ईरानी इस्सस पर उसके पीछे हैं तो वह अचानक मुड़ा और हमले के लिए तैयार हो गया।

डेरियस भी इस्सस से निकलने की जल्दी में था। जब उसने पथरीला इलाका देखा तब उसे लगा कि वहां उसके घुड़सवार बेकार हो जाएंगे और उसकी सेना बंट जाएगी, यूनानी इसका फायदा उठा सकते हैं। इससे पहले कि डेरियस अपने ही बनाए जाल से बच पाता, सिकंदर पहुंच गया। सिकंदर खुद दायें हिस्से की कमान को संभाल रहा था जिसने ईरानियों को बायीं ओर दबा दिया। डेरियस घबरा गया। वह अपने रथ को छोड़कर भाग खड़ा हुआ। अपना रथ, अपना धनुष, अपना ढाल, अपना लबादा और अपनी फौज और 1 लाख 10 हजार घायल– सबको छोड़कर वह भाग खड़ा हो गया। (इतिहासकार एरियन ने बताया है कि ईरानी अच्छा लड़ रहे थे, जब तक कि डेरियस भाग नहीं गया। उसके भागते ही सैनिक घबरा गए। वे भी एक-दूसरे को धक्का मारते हुए पहाड़ों के संकरे रास्ते से भागने की कोशिश करने लगे। सिकंदर का नुकसान बहुत कम था, सिर्फ 450 सैनिक मारे गए और 4500 घायल हुए, जिनमें खुद सिकंदर भी था। उसे जांघ में तलवार से चोट लगी थी। एरियन सिकंदर की जीवनी लिखने वाला सबसे भरोसेमंद पुराना लेखक है और उसने प्लूटार्क से एकदम बाद में लिखा है। उसका बताया हुआ वास्तविक इतिहास है और इसीलिए वह प्लूटार्क के इतिहास से ज्यादा मुकम्मल है।)

युद्धबंदियों में डेरियस की मां, पत्नी और बेटियां भी थीं। सिकंदर

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

ने इन महिलाओं को आश्वस्त किया कि उन्हें उससे या उसके आदमियों से डरने की जरूरत नहीं है। उसने डेरियस से साम्राज्य के लिए लड़ाई की है, न कि किसी व्यक्तिगत वजह से। उसने उन्हें भरोसा दिलाया कि उनकी हैसियत के हिसाब से ही उनके साथ व्यवहार किया जाएगा और उन्हें वह सब प्राप्त होगा जो डेरियस के यहां उन्हें मिलता था। सिकंदर महिलाओं के लिए हमेशा बहुत पवित्र और दयालु व्यवहार रखता था। वह शादी की संस्था की बहुत इज्जत करता था। वह कहा करता था कि दो चीजें– नींद और प्रजनन की प्रक्रिया, उसे हमेशा याद दिलाती थीं कि वह इंसान है, भगवान नहीं; जैसे वह यह कहना चाहता हो कि थकान और वासना दोनों मानवीय प्रकृति की उसी कमजोरी और नासमझी से पैदा होती हैं।

सिकंदर का अपनी भूख पर पूरा नियंत्रण था। न तो वह चीजें चुन–चुनकर खाने वाला था और न ही सब कुछ खा लेने वाला पेटू था। जब उससे कुछ रसोइयों की पाक कुशलता के बारे में कहा गया तो उसने यह कहा कि भूख बढ़ाने के लिए सबसे अच्छी चीज है नाश्ते से पहले पैदल चलना और संतुलित नाश्ता ताकि रात का खाना ठीक से खाया जा सके। आम तौर पर प्रचलित है कि सिकंदर को शराब की आदत थी। शायद यह धारणा इस वजह से बनी कि उसे शराब पीते हुए देर रात तक बातें करना बहुत पसंद था।

उसके पास जब भी खाली समय होता वह उसे पढ़ने–लिखने या शिकार पर जाने में लगाता। जब तक खूब अंधेरा नहीं हो जाता, वह रात को खाने के लिए नहीं जाता। फिर देर तक खाना खाता, क्योंकि उसे बात करना खूब पसंद था। आमतौर पर उसकी बातचीत मजेदार और बुद्धिमत्तापूर्ण होती थी, परन्तु कभी–कभी उसे डींग मारते हुए समय बिताना पसंद था। इससे उसके आसपास के चापलूसों को मौका मिलता था और उसके दोस्तों में अप्रिय स्थिति पैदा हो जाती थी, जब उन्हें शर्म और डर– दोनों में से किसी एक को चुनना पड़ता था। वे चापलूसी करना तिरस्कारपूर्ण समझते, लेकिन नहीं करते तो उसे नाराज करते।

X X X X

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

इस्सस की लड़ाई के बाद (333 ई.पू.) सिकंदर ने कुछ लोगों को डमास्कस भेजा, ईरानी फौज के छोड़े हुए सामान और पैसों को लेने के लिए। अब यूनानी फौज का हरेक सिपाही अमीर बन गया। साथ में सुंदर महिलाएं गुलामों के तौर पर मिल गईं। सिकंदर ने इस सबकी इजाजत दे दी, क्योंकि वह चाहता था कि उसके फौजी इस बर्बर ऐश का मजा लें और दुगनी ताकत और उत्साह से और राज्यों को जीतने निकल पड़ें। सिकंदर इसे ऐसे देखता जैसे खोजी कुत्ते को बू सूंघा देते हैं ताकि वह उसे ढूंढ़ निकाले।

सिकंदर टॉयर शहर के तटवर्ती इलाके की ओर चल पड़ा। उसने समर्पण करने से मना कर दिया था। जब तक उसकी सेना टॉयर शहर का घेराव करके बैठी थी (332 ई.पू.) सिकंदर अरबिया चला गया।

एक दिन सिकंदर अपने पुराने अध्यापक लाइसीमाकस (जिसकी तुलना वह फीनिक्स से करता था जो कि एकिलिस का संरक्षक था) की वजह से अपनी बाकी फौज से पीछे छूट गया। रात को सिकंदर बड़ी खतरनाक स्थिति में फंस गया। वह अपनी फौज से बहुत दूर था और सर्दी से लड़ने के लिए कोई आग भी नहीं थी। उसने देखा कि कुछ दुश्मन आग का अलाव लगाकर बैठे हैं। वह भागकर उनके पास गया और अपने चाकू से दो सैनिकों को मार गिराया, फिर एक जलती हुई लकड़ी लेकर अपने आदमी के पास आया। यह सिर्फ सिकंदर ही कर सकता था। वह हमेशा अपने लोगों को खुद का उदाहरण देकर उत्साहित करता था कि खतरे का सामना करो और हर काम के लिए तैयार रहो।

सातवें महीने में जब टॉयर शहर आखिरकार कब्जे में कर लिया गया, डेरियस ने सिकंदर को लिखा और अपने युद्धबंदियों को छुड़ाने के लिए रकम देने की पेशकश रखी। डेरियस ने सिकंदर को अपनी लड़की देने की भी पेशकश की कि वह उसे अपनी पत्नी बना ले।

सिकंदर ने अपने दोस्त को इस पेशकश के बारे में बताया और सलाह मांगी। पारमेनियो ने कहा, "अगर मैं तुम होता तो मैं खुशी से मान जाता।"

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

सिकंदर ने जवाब दिया, “हां, मैं भी मान जाता अगर मैं पारमेनियो होता। लेकिन मैं सिकंदर हूं, इसलिए मैं डेरियस को भिन्न जवाब भेजूंगा।” और उसने डेरियस को यह जवाब भेजा, “पूरा एशिया मेरा है अपने पूरे खजाने के साथ। यह पैसा जो तुम मुझे देने को कह रहे हो वह भी मेरा है। रही बात तुम्हारी लड़की की, तो अगर मैं उससे शादी करना चाहूंगा तो तुम चाहो या न चाहो मैं कर लूंगा। हां, अगर तुम्हें मुझसे कुछ चाहिए तो खुद आओ और मुझसे मांग लो। वरना तुम जहां भी जाओगे मैं वहीं आऊंगा।”

xxxx

टॉयर और गाजा पर कब्जे के बाद सिकंदर मिस्र चला गया। उसे अपने नाम का शहर एलेक्जेंड्रिया बनाने के लिए नील नदी के मुहाने पर ही जगह मिल गई (331 ई.पू.), बिल्कुल वैसी ही जगह जैसी उसके सपने में थी। उसके भविष्यवक्ताओं का कहना था कि एलेक्जेंड्रिया एक बहुत बड़ा शहर बनेगा जो अनेक अजनबियों को रोजी-रोटी देगा। और आगे यही हुआ।

सिकंदर ने भगवान अम्मोन के मंदिर जाने के लिए तय किया जिसके लिए उसे रेगिस्तान से यात्रा करनी थी। (अम्मोन एक नुकीला, मुड़े हुए सींगों वाला जुपिटर की मिस्री शैली में बना हुआ बकरा था। ओलिमपियास की जासूसी के बाद और उसके बिस्तर में सांप देखने के बाद राजा फिलिप ने डेलफी में अपोलो के भविष्यवक्ता से इस अजीब दृश्य का अर्थ पूछा था। भविष्यवाणी करने वाले ने बताया- सांप अम्मोन का ही एक रूप था, यूनानी भगवान अलग-अलग रूप बदलने में सक्षम माने जाते हैं। ओलिमपियास ने सिकंदर को यह रहस्य बताया कि अम्मोन ही तुम्हारे पिता हैं, न कि राजा फिलिप।)

पूरे रास्ते में न केवल पानी की कमी थी, बल्कि वहां पहले पूरी की पूरी फौज को अंधड़ दफन कर चुका था। ये सब परेशानियां और खतरे सिकंदर के लिए कोई मायने नहीं रखते थे। वह अगर कुछ करने का तय कर लेता था तो फिर उसे करके की दम लेता था। सिकंदर के सौभाग्य ने उसे अपने निर्णय में टिके रहना सिखाया और

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

उसके स्वाभाविक साहस ने उसे मुश्किल परिस्थितियों का भी हंसते-हंसते मुकाबला करना सिखाया। जैसे सेनाओं को जीतना ही काफी न हो, जैसे प्रकृति भी उसके लिए उपयुक्त प्रतिद्वंद्वी हो सकती हो।

सिकंदर का सौभाग्य उसका साथ देता रहा। भारी वर्षा ने पानी की कमी पूरी कर दी और मिट्टी उड़ने की समस्या भी नहीं रही। जब मेसिडोनियावासी रास्ता भूल गए तो काले कौवे उन्हें रास्ता बताने आ गए। ये सभी आगे-आगे रास्ता बताते उड़ते रहे और रात में अंधेरा होने पर उनकी आवाज से रास्ते का पता लगता रहा। अम्मोन के मंदिर में सिकंदर ने भविष्यवाणी करने वाले से पूछा, "क्या मुझे विश्व का विजेता बनाने की इजाजत भगवान देंगे?" भविष्यवक्ता ने कहा, "हां।" मिस्र से लौटते हुए सिकंदर ने फरात से दक्षिण की ओर के सभी देशों का आत्मसमर्पण स्वीकार किया। फिर वह डेरियस के पीछे पड़ा, जिसने तब तक दूसरी फौज इकट्ठी कर ली थी। इस बार उसकी फौज में दस लाख लोग थे।

दोनों फौजें गोगा मेला (जो अरबेला के नाम से भी जाना जाता है।) में अक्टूबर 331 ई.पू. में एक-दूसरे के आमने-सामने हो गईं। उस विशाल ईरानी शिविर की अलाव की आग और शोर ऐसा डराने वाला था कि सिकंदर के कुछ जत्थेदारों ने सलाह दी कि हमला दिन की रोशनी की बजाय रात को करना चाहिए, क्योंकि इतनी बड़ी फौज का दिन में मुकाबला करना खतरनाक होगा। सिकंदर ने जवाब दिया, "मैं विजय को चुराना नहीं चाहता।" कुछ लोगों को यह घमण्ड से भरा और अपरिपक्व जवाब लगा, लेकिन यह बुद्धिमानी-पूर्ण निर्णय था। अगर डेरियस यह लड़ाई अपने ही चुने हुए मैदान में दिन-दहाड़े हार जाता तो फिर वह दोबारा अपने टूटे दिल से दोबारा उठने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

इसलिए सिकंदर और उसके लोगों ने अगली सुबह होने का इंतजार किया। (इतिहासकार एरियन ने बताया है कि डेरियस ने अपनी फौज को मुस्तैदी से पूरी रात खड़ा रखा। इससे अगले दिन सुबह

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

उसकी पूरी फौज बुरी तरह थक गई। डेरियस ने ऐसा इसलिए किया कि वह रात को हमले की आशंका कर रहा था। सिकंदर अच्छी लम्बी नींद लेकर चुस्ती और खुशमिजाजी से उठा।)

सिकंदर लड़ाई से पहले इधर-उधर घुड़सवारी कर रहा था। वह बुसिफेलस के अलावा भी दूसरे घोड़े इस्तेमाल करता रहा। जब लड़ाई पर जाने का समय हुआ उसने बुसिफेलस को तैयार किया और हमले की घोषणा कर दी। उस दिन सिकंदर ने थिसालियनों और यूनानियों को लम्बा भाषण दिया, जिसका जनता ने जोर-जोर से उत्साहवर्धक नारे लगाकर स्वागत किया। सिकंदर ने अपना भाला अपने दाएं हाथ में लेकर सीधे हाथ ऊपर उठाकर देवी से विजय की प्रार्थना की। ठीक उसी क्षण एक चील ऊंची उड़ती हुई उसके ऊपर आई और शत्रु की तरफ उड़ गई। इस शुभ शगुन से हर सैनिक के दिल में जोश और उत्साह भर गया। घुड़सवार पूरी गति से दौड़े। इनके पीछे मेसिडोनिया का जत्था था। ईरानियों ने उनका इंतजार नहीं किया और पीछे हट गए। सिकंदर ने उनका बीच में झुण्ड बनवाए रखा जहां डेरियस अपने अच्छे योद्धाओं के साथ खड़ा था। इन भगोड़े लोगों ने ऐसी भीड़ कर दी कि जो लड़ने को तैयार थे वे भी लड़ नहीं पाए। डेरियस के चारों ओर मरे हुए सैनिकों के इतने ऊंचे ढेर लग गए कि उन्होंने डेरियस के रथ के घोड़ों को भी ढंक लिया। डेरियस एक बार फिर अपनी सेना को छोड़कर भाग गया। (डेरियस और सिकंदर की सेना का अनुपात 20 और 1 का था। इतनी बड़ी सेना लेकर भी वह हार गया।)

पारमेनियो ने जिनके पास बाएं बाजू की कमान थी, सिकंदर को एक अति-महत्वपूर्ण संदेश भेजा कि अगर कुमुक आगे से पीछे नहीं भेजी गई तो यूनानी कैम्प और सारा सामान ईरानियों के पास चला जाएगा। सिकंदर ने पारमेनियो को जवाब दिया, "यह न भूलो कि अगर जीत गए तो न केवल अपना सामान, बल्कि दुश्मनों का सामान भी हमारा होगा। अगर हार गए तब भी सामान की चिंता न करो, क्योंकि बहादुर आदमी की मौत ही मकसद होना चाहिए।"

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

सिकंदर बिना विरोध के बेबीलोन तक कब्जा करता गया, जिसने एकदम आत्मसमर्पण कर दिया। तब वह सूसा गया, जहां उसे बड़े पैमाने पर सोना और दूसरे खजाने मिले। वह ईरान के अंदर पहुंच गया और उसकी राजधानी परसीपोलिस में अपनी सेना के साथ सर्दियां बिताईं। (जनवरी-मई 330 ई.पू.) उस दौरान डेरियस अपनी शानदार फौज के बचे हुए छोटे से टुकड़े के साथ उत्तर की तरफ बचकर निकल गया।

डेरियस को ढूंढने से पहले सिकंदर ने अपने अफसरों की दावत की। यहां तक कि उसने उन्हें अपनी औरतों को लाने की इजाजत भी दे दी। उनमें से एक एथेंस की वेश्या थी जिसका नाम थाईस था। शराब का दौर कुछ समय चलने के बाद थाईस ने घोषणा की कि वह प्राचीन राजा जेरसेक्स के महल को जलाना पसंद करेगी जिसने एथेंस को जला दिया था। फिर उसने कहा, "यह कहा जाएगा कि जिन महिलाओं ने सिकंदर का अनुकरण किया है वह पुराने यूनानी जनरलों से भी बढ़कर बहादुर थीं, जो पहले यह कोशिश कर चुके थे।" इस तरीके के चापलूसी भरे और मजेदार प्रस्ताव का पियक्कड़ों की तरफ से भारी स्वागत किया गया, जिनमें सिकंदर भी था। उसने हाथ में मशाल लेकर रास्ता दिखाया, दूसरों ने नाचते हुए अनुकरण किया। जब बाकी मेसिडोनियावासियों ने शोर सुना और वजह पता लगी तो वे भी शामिल हो गए। वे उम्मीद कर रहे थे कि ईरान के राजा के महल को जला देने से यह पक्का हो जाएगा कि सिकंदर वापस मेसिडोनिया जाएगा, न कि वहीं बर्बर लोगों के बीच में ही बस जाएगा। हालांकि आग के जलते ही थोड़ी देर बाद सिकंदर ने उसे बुझा देने का हुक्म दे दिया।

डेरियस से सिकंदर ने जो भी जीता उसमें सबसे उत्कृष्ट और कीमती एक डिब्बा था। उसने अपने दोस्तों से पूछा कि इसमें क्या रखना चाहिए? अलग-अलग सुझाव आए कि यह कीमती चीज है, इसमें यह रखो। बहुत सारी कीमती चीजों की बात आई। आखिर में सिकंदर ने तय किया कि उनमें से किसी वस्तु को उसमें रखे जाने का सौभाग्य नहीं मिलेगा, बल्कि यह सौभाग्य उसकी टिप्पणियों के साथ उसकी प्रिय पुस्तक 'इलियड' को मिलेगा।

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

जिन उपहारों को उसने यूनान भेजा उनमें बड़ी मात्रा में लोबान और गन्धरस भी था, जो उसने अपने गुरु लियोनिदस को भेजे। इन उपहारों को भेजने का खास मतलब था। जब एक बार सिकंदर काफी छोटा था लियोनिदस ने उसे इस सामग्री को अपनी पूजा में इतना ज्यादा इस्तेमाल करने से मना किया और कहा, "जब तुम उन देशों को जीत लो, जहां ये पाए जाते हैं, तब ज्यादा खर्च कर लेना; लेकिन अभी हमारे पास कम है, इसलिए बेजा इस्तेमाल मत करो।" सिकंदर ने यह सौगात इस नोट के साथ उनको भेजी, "हम आपको काफी मात्रा में लोबान और गन्धरस भेज रहे हैं ताकि भविष्य में भगवान की पूजा में कंजूसी न करनी पड़े।"

सिकंदर की स्वाभाविक दयालुता उसकी संपत्ति और ताकत के साथ बढ़ती रही। अपने उपहार वह बहुत आदर से देता था। उसका उपहार बहुत सराहा जाता। उदाहरण के तौर पर अरिस्टन ने एक दुश्मन को मारा और उसने उसका सिर प्रमाण के तौर पर सिकंदर को दिखाया और कहा, "रिवाज है कि देश की ऐसी सेवा के लिए सोने का कप दिया जाता है।" सिकंदर ने मुस्कराकर कहा, "हां, एक खाली कप। लेकिन तुम्हारे लिए तो यहां शराब से भरा कप है और हम तुम्हारी अच्छी सेवा और दोस्ती के नाम पर जाम टकराएंगे।"

एक दूसरे समय एक साधारण सैनिक सिकंदर के खजाने से लदे एक घोड़े को चला रहा था। घोड़ा बहुत थक गया था तो सिपाही ने वजन अपने कंधे पर रख लिया। सिकंदर ने इस सिपाही को वजन से डगमगाते देखा और पूछा कि क्या बात है। सिपाही ने बताया कि घोड़ा बहुत ज्यादा थक गया था और उसका भी धैर्य चुक रहा है। तो सिकंदर ने कहा, ''धैर्य मत छोड़ो, जितना भी तुम आखिर तक ले जा सकते हो, अपने कैम्प में ले जाओ और अपने लिए रख लो।'' सिकंदर उन लोगों से ज्यादा नाराज होता था जो उसकी दयालुता को स्वीकार नहीं करना चाहते थे, न कि उनसे जो उसे गाली देते थे। उसकी मां ओलिमपियास बहुत बार उसे लिखती थी और लगातार सलाह देती थी कि वह अपने दोस्तों को इतना सम्मान न दे कि वे अपनी स्वतंत्र

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

ताकत बना लें और सिकंदर अपनी दयालुता की वजह से कमजोर और गरीब बन जाए। सिकंदर ने अपनी मां को बहुत उपहार भेजे और बहुत नजदीकी संपर्क रखा, लेकिन उसकी राय नहीं मानी। उससे ओलिमपियास नाराज हो गई और सिकंदर ने धैर्य से उसके क्रोध को सहन किया। ओलिमपियास मेसिडोनिया में शासन में भी दखल देती थी, लेकिन उसने उसे भी सहन किया। एंटीपेटर ने, जो मेसिडोनिया का राज्यपाल था, ओलिमपियास के बारे में एक लम्बा पत्र सिकंदर को लिखा। इसके बारे में सिकंदर ने अपने दोस्त से कहा, "एंटीपेटर यह नहीं जानता कि मां की आंख से निकला एक आंसू ऐसे 10 हजार पत्रों को धो सकता है।"

चूंकि अब वे अमीर थे और ऐश के आदी हो गए थे, सिकंदर के फौजी अपने सैनिक अभ्यास में ढील करने लगे। सिकंदर बड़ी विनम्रता से उन्हें डांटता कि इतनी कठिनाइयों और इतनी लड़ाइयों से उन्होंने कुछ नहीं सीखा। जो लोग श्रम करते हैं वे उन लोगों के मुकाबले अच्छी नींद सोते हैं जिनके लिए वे काम करते हैं। ऐशोआराम की जिंदगी गुलाम बनाती है, जबकि शासन वहीं कर सकते हैं जो दर्द और मेहनत से होकर गुजरते हैं। आरामतलबी गुलामी की तरफ ले जाती है। फिर कहता, "क्या तुम लोगों ने अभी तक नहीं सीखा कि हमारी जीत की गरिमा और परिपूर्णता इसी में है कि हम दुर्गुणों से बचे रहें, उन दुर्गुणों से जिनकी वजह से हम अपने दुश्मनों को इतनी आसानी से हरा सके।"

सिकंदर खासतौर से उनके सैनिक अभ्यास के लिए चिंतित था। वह कहता था कि वह व्यक्ति फौजी होने का दंभ नहीं भर सकता जो अपने सबसे नजदीकी सामान का ध्यान नहीं रख सकता और वह सामान है उसका शरीर– भले ही उसके पास शानदार भाला और उत्तम घोड़ा हो। सिकंदर अपना उदाहरण देता था: खुशी के, आराम के दिनों को मस्ती में बिताने की बजाय वह शेर का शिकार पसंद करता था। लेकिन उसके फौजी और सहयोगी घमण्डी हो रहे थे, क्योंकि वे अमीर थे। वे लड़कर और चढ़ाई करके थक चुके थे। आखिर में

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

उनके खराब व्यवहार ने उन्हें यहां तक ला दिया कि वे अपने नेता के बारे में भी खराब बातें करने लगे।

शुरू में तो सिकंदर ने सब्र रखा यह कहते हुए कि "राजा को दूसरों के लिए अच्छी चीजें करनी चाहिए, भले ही उसे बदले में खराब शब्द मिलें।" अपने दोस्तों के प्रति उसने दयालुता दिखाना जारी रखा। लेकिन सिकंदर एक बात कभी सहन नहीं कर सकता था, वह थी योद्धा के तौर पर अपनी छवि के लिए अनादर भाव। यह चीज उसे अपनी जिंदगी और अपनी संपत्ति से भी ज्यादा प्यारी थी।

XXXX

आखिरकार डेरियस को खोज निकालने का समय आ गया। 11 दिन में 400 मील की यात्रा करके सिकंदर और उसके सिपाहियों की प्यास से मरने की स्थिति हो गई। कुछ मेसिडोनियन खोजी थोड़ा पानी काफी दूर से ले लाए और उन्होंने सिकंदर को एक हेलमेट भर कर पानी देने की पेशकश की। सिकंदर का मुंह हालांकि रुकने की हद तक सूखा था, लेकिन उसने धन्यवाद करते हुए पानी वापस कर दिया और कहा, "यह सबके लिए काफी नहीं है और अगर सिर्फ मैं पी लूंगा तो दूसरे बेहोश हो जाएंगे।" उसके लोगों ने जब यह सब देखा तो उन्होंने अपने घोड़ों को आगे करके जोर से एंड़ लगाई और नारे लगाने लगे कि "लड़ाई में हमारा नेतृत्व करो।" उनका कहना था कि ऐसे प्रिय राजा के साथ वे किसी भी चुनौती का मुकाबला करने को तैयार हैं।

खबर आई कि बेसस ने डेरियस को धोखा दिया और उसी के कैम्प में उसे बंदी बना लिया। सिकंदर बहुत तेजी से अपने 160 घुड़सवारों को लेकर चल पड़ा। जब वह कैम्प में पहुंचा तो बेसस डेरियस को मरने के लिए छोड़कर जा चुका था। डेरियस मरणासन्न था। वह मरने लगा। उसने सिकंदर के आदमी से कहा, "यह मेरे बुरे कर्मों का फल है। मैं इतना भी नहीं जी सका कि मैं सिकंदर की दयालुता का धन्यवाद कर सकूं, जो उसने मेरी पत्नी, बच्चों और मेरी

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

मां के लिए दिखाई।" डेरियस सिकंदर के पहुंचने से पहले ही मर चुका था (जुलाई 330 ई.पू)। सिकंदर ने अपना चोगा उतारकर उसे ओढ़ा दिया और ईमानदारी से उसकी मौत पर अफसोस जाहिर किया। उसका मृत शरीर उसकी मां को भेज दिया गया ताकि वह पूरे आदर के साथ अंतिम संस्कार कर सके। गद्दार बेसस को झुके हुए पेड़ों से बांधकर टुकड़े-टुकड़े करके इनाम दिया गया और इस तरह मौत दे दी गई।

XXXX

पार्थिया में सिकंदर की सेना ने पड़ाव डाला। वहीं सिकंदर ने पहली बार बर्बर कपड़े पहने। इसके पहले वह इसे सिर्फ बर्बर लोगों का दिल जीतने के लिए उनसे बातचीत के वक्त पहनता था। लेकिन उसके बाद वह वही कपड़े अपने सैनिकों के सामने भी पहनने लगा। यह उन्हें दुख से भर देता था। लेकिन फिर वे अपने इतने बहादुर योद्धा की सनक मानकर इसके लिए तैयार हो गए।

सिकंदर बैक्ट्रीया में चलता गया और जीतता गया (328 ई.पू.)। वहां बाकी बंदियों में उसने राजा की लड़की रोक्सेने को देखा। उसे

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

पहली नजर में ही सच्चा प्यार हो गया और उसने उससे शादी कर ली। रोक्सेने को ताकत से अपना बनाने की बजाय उसने पूरे बैक्ट्रीयन रीति–रिवाजों के साथ औपचारिक शादी की। इस आत्मनियंत्रण और दूसरे की संस्कृति के लिए आदर ने उसे बर्बरों का प्रिय बना दिया।

सिकंदर का दोस्त हिफिएशटन उसके विदेशी रीति–रिवाजों को अपनाने के रवैये का प्रशंसक था और उसे कहां तक अपनाना ठीक है, यह भी बताता था। लेकिन क्रेटीरियस अपने मेसीडोनियन तरीके पर कायम रहा। सिकंदर हिफिएशटन को बर्बरों के साथ बातचीत में इस्तेमाल करता था और क्रेटीरियस को यूनानियों के साथ। सिकंदर हिफिएशटन के साथ ज्यादा लगाव दिखाता था जिसको वह सिकंदर का दोस्त कहता था और क्रेटीरियस की ज्यादा इज्जत करता था और उसे राजा का दोस्त कहता था। ये दोनों दोस्त एक–दूसरे के लिए मन में ईर्ष्या रखते थे। कई बार तो दोनों सिपाहियों के सामने ही आपस में लड़ने लगते थे।

फौज में सिकंदर के दूसरे देशों की वेशभूषा और रीति–रिवाज अपना लेने पर असंतोष था। बर्बरों से वह अपेक्षा करता था कि वे पूर्व के सम्राटों की तरह उसके सामने गिड़गिड़ाएं, और अपने को 'ईश्वर पुत्र' की पदवी देता था। (इतिहासकार एरियन ने हमें बताया है कि सिकंदर ने ईरानी दरबार की तरह अपने यहां साष्टांग प्रणाम करने का रिवाज शुरू किया। यहां तक कि मेसिडोनियनों को भी सिकंदर को देखते ही जमीन तक झुककर प्रणाम करना पड़ता था। हालांकि मेसिडोनियनों के लिए यह वैकल्पिक था। इस तरह जो करते थे सिकंदर उनसे ज्यादा खुश होता था, न कि जो नहीं करते थे उनसे। उसके लिए सुना जाता था कि उसकी लगातार यह नीति है कि वह मेसिडोनियनों का दोस्त है और बर्बरों का भगवान है।) लेकिन यूनानियों के लिए सिकंदर ज्यादा विनम्र था। वह हमेशा कहा करता था कि भगवान हम सबका सामान्य पिता है, परन्तु खासतौर से विशिष्टों का। उसके दोस्तों के बीच में सिकंदर सहज तरीके से पेश आता था, जबकि बर्बरों के बीच में वह सहज नहीं रह पाता था।

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

x x x x

मेसिडोनियनों के बीच प्रतिष्ठा में सिकंदर के बाद फिलोटस (पारमेनियो के पुत्र) का दूसरे नम्बर का स्थान था। फिलोटस बहुत बहादुर था और युद्ध की थकान को भी वह झेल लेता था। वह भी अपने दोस्तों के साथ उतना ही दयालु था जितना सिकंदर।

लेकिन फिलोटस घमण्डी था और उसे अपनी संपत्ति का गर्व बहुत था। उसमें विनम्रता और बड़प्पन अंश मात्र भी नहीं था। इसलिए उसकी बनावटी तेजस्विता ने काफी दुश्मन और नफरत करने वाले पैदा किए। काफी लम्बे समय तक सिकंदर उसकी शिकायतें सुनता रहा। फिलोटस के पिता पारमेनियो इसे जानते थे और फिलोटस को अपने व्यवहार को ठीक करने की सलाह भी देते रहते थे।

गुलामों में से एक थी, प्यादना शहर की एंटीगोनी, जिसे फिलोटस ने जीता था। एक दिन फिलोटस काफी नशे में था। उसने एंटीगोनी को डींग मारी कि सारी विजय के पीछे मैं और मेरे पिता हैं और सिकंदर एक लड़का है जो सारी वाहवाही ले लेता है। एंटीगोनी ने यह बात दूसरी महिला को बता दी। घटनावश क्रेटीरियस ने यह टिप्पणी सुनी और वह एंटीगोनी को चुपचाप सिकंदर के पास ले गया। सिकंदर ने उसकी बात सुनी और उसके बाद उससे कहा कि तुम उसे चढ़ाती रहो और फिर जो भी सूचना हो आकर देना कि उसने क्या कहा है। लेकिन सिकंदर ने उसके खिलाफ कोई फैसला नहीं लिया, क्योंकि वह अपनी फौज को अशांत नहीं करना चाहता था। लिमनस के मामले ने स्थिति संबंध तोड़ने की हद तक ला दी। यह लिमनस एक मेसिडोनियन था, और उसने सिकंदर को मारने का षड्यंत्र रचा। उसने निकोमाचस को भी साथ में लेने की सोची, जिसने इंकार कर दिया। निकोमाचस ने इस रहस्य को अपने भाई को बताया। दोनों भाई फिलोटस के पास गए और सिकंदर से मिलने की गंभीरता बताई। दोनों ने बार-बार गंभीरता बताकर मिलने का आग्रह किया, लेकिन फिलोटस ने उन्हें यह कहकर दूर रखा कि सिकंदर बहुत व्यस्त है।

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

तब दोनों भाई किसी और से मिलने के लिए गए, जिसने सिकंदर के साथ मिलना तय किया। भाइयों ने सिकंदर को लिमनस के षड्यंत्र के बारे में बताया, और फिर यह भी बताया कि फिलोटस ने पहले मिलकर बताने से रोका था। सिकंदर ने एक सिपाही को लिमनस की पूछताछ के लिए भेजा। जब सिपाही ने आकर बताया कि लिमनस गिरफ्तारी की बजाय मर गया, तो सिकंदर और ज्यादा गुस्सा हुआ, क्योंकि इससे असली दुश्मन और षड्यंत्रकर्ता को खोजने का रास्ता बंद हो गया।

लेकिन फिलोटस के दुश्मनों ने बताया कि इतने बड़े षड्यंत्र के पीछे सिर्फ लिमनस जैसा साधारण आदमी ही नहीं होगा। उन्होंने सलाह दी कि खोजबीन और सवाल-जवाब उन लोगों से शुरू किया जाना चाहिए, जिन्होंने इस षड्यंत्र को रोकने के काम में बाधा डाली। एक बार अगर वे सिकंदर के दिमाग में यह बात डाल पाते तो फिर यह दिखाने की हजार वजहें थीं कि फिलोटस पर शक किया जाना चाहिए। वे इसमें इतने सफल हो गए कि सिकंदर ने फिलोटस को गिरफ्तार करके शारीरिक यातना के साथ पूछताछ शुरू की। हालांकि फिलोटस ने मना किया कि उसका इस षड्यंत्र में कोई हाथ है, लेकिन उसे फांसी दे दी गई। सिकंदर ने फिलोटस के पिता को भी मारने के लिए भेजा जो कि फौज में दूसरे नम्बर का कमांडर था और सिकंदर के पिता फिलिप का वफादार था।

इन कार्रवाइयों ने सिकंदर के दोस्तों में डर पैदा कर दिया और उसके थोड़े दिन बाद ही सिकंदर ने खुद अपने दोस्त क्लिटस को मार दिया। (क्लिटस सिकंदर की धाय मां का भाई था, जो फिलिप के राज्य में काफी महत्वपूर्ण कमांडर था और सिकंदर की फौज में रॉयल स्क्वैड्रन का कमांडर था। उसने ग्रेनिकस नदी की लड़ाई में सिकंदर की जान बचाई थी। क्लिटस उन मेसिडोनियन कमांडरों में से था, जिन्हें सिकंदर का योद्धा राजा से बर्बर अहंकारी बन जाना बिल्कुल पसंद नहीं था। यह घटना मारकण्डा में हुई थी, 328 ई.पू.।) सिकंदर

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

को यूनान से ताजा फल सौगात में मिले और जैसा कि उसका रिवाज था, उसने अपने दोस्तों को फलों की दावत पर बुलाया। उनमें क्लिटस भी एक था।

जब सब लोगों ने खूब शराब पी ली, क्लिटस, सिकंदर और कुछ लोगों ने गाना गाना शुरू किया। इसमें मेसिडोनियनों का बर्बरों के साथ हाल की एक लड़ाई में हारने का मजाक उड़ाया गया था। बूढ़े लोग इससे नाखुश हो गए और सिकंदर और जवान लोग मजे ले रहे थे। उन्होंने गाने वाले को गाते रहने के लिए कहा। क्लिटस ने कहा कि बर्बरों के सामने मेसिडोनियनों के बारे में मजाक नहीं करना चाहिए, जबकि व्यंग्य किए जाने वाले उनसे अच्छे आदमी हैं, वह तो लड़ाई में उनकी किस्मत खराब थी।

सिकंदर ने मजाक किया– क्लिटस अपने लिए क्षमा मांग रहा है, कायरता को बुरी किस्मत का नाम देकर। क्लिटस ने उसके पैर पकड़ लिए और कहा, "आपको इसे कायरता कहना पसंद है तो कहिए, इसी

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

ने ग्रेनिकस की लड़ाई में भगवान के पुत्र की जान बचाई थी। उन गरीब मेसिडोनियनों ने, जिनपर आप हंस रहे हैं, आपके लिए लड़ते हुए जख्म खाए हैं। उन्होंने आपको इतना बड़ा बना दिया है कि आप अपने पिता फिलिप को त्यागकर अपने को अम्मोन का पुत्र कहते हैं।"

इन वाक्यों से स्तब्ध सिकंदर ने उसे धमकी दी, "क्या तुम सोचते हो कि इन बातों की तुम्हें सजा नहीं मिलेगी, जो तुमने अभी मेसिडोनियनों को मेरे खिलाफ करने के लिए कही हैं?" क्लिटस फिर भी चुप नहीं हुआ, "हमें पहले ही काफी सजा मिल चुकी है," उसने कहा, "अगर हमारे काम का यही इनाम है तो वे लोग भाग्यशाली हैं जो मेसिडोनियनों को ईरानियों से अपने राजा से मिलने की दया मांगते देखने के लिए जिंदा नहीं रहे और यूनानियों को बर्बरों के डंडों से पिटते देखने के लिए जिंदा नहीं बचे।" (सिकंदर ने स्थानीय निवासियों में से लोगों को फौज में भर्ती किए थे)। सिकंदर ने भाला उठाकर क्लिटस को भोंक दिया।

उस पूरी रात और अगले दिन सिकंदर बुरी तरह रोता रहा जब तक कि उसके आंसू खत्म न हो गए। वह अपने कक्ष के फर्श पर गिरकर सिसकियां लेता रहा। उसके दोस्तों ने सोचा, इस चुप्पी का मतलब है कि वह खतरे में है-यह मानकर उन्होंने दरवाजा तोड़ दिया। (सिकंदर ने उसी भाले से खुद को मारने की कोशिश की जिससे उसने क्लिटस को मारा था। जब उसने महसूस किया कि उसने क्या किया है, उसने अपने-आपको अपने दोस्त का हत्यारा कहा जो कि वह सच में था।) लेकिन सिकंदर ने उन लोगों की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जब तक कि वे लोग केलिसथीनिस (अरस्तू का नजदीकी दोस्त) को नहीं ले आए। केलिसथीनिस अपने साथ एक और दार्शनिक एनाक्सआरस को भी लाया था।

केलिसथीनिस ने उसे आराम देने के लिए कई नैतिक उपदेश दिए, लेकिन सिकंदर को आराम नहीं पहुंचा। एनाक्सआरस ने सिकंदर को उदासी से निकालने के लिए कहा, "अच्छा तो यह सिकंदर है,

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

महान सिकंदर, जो सारे विश्व से डर रहा है! उसे देखो जमीन पर लेटे हुए सिसकियां लेते हुए, क्योंकि वह सोच रहा है लोग क्या कहेंगे! जैसे उसे खुद कानून नहीं बनाना है। न्याय और अन्याय की सीमाएं तो उसी को बतानी है। यह जो जीत रहा है यह राजा और भगवान है न कि गुलाम, छोटे लोगों का आदर्श है।" इस तरह की बातों से एनाक्सआरस ने सिकंदर को आराम पहुंचाया, लेकिन उसके चरित्र को खराब किया। उसे आगे और भी गलत चीजों को करने के लिए और हिम्मत दी। (सिकंदर रो पड़ा जब उसने एनाक्सआरस से ब्रह्मांड में अनगिनत विश्व होने की बात सुनी। सिकंदर के दोस्त ने पूछा, "क्या बात है!" तो सिकंदर ने जवाब दिया, "यहां इतने सारे संसार हैं और मैंने अभी तक एक को भी पूरी तरह फतह नहीं किया।")

दोनों दार्शनिक– एनाक्सआरस और केलिसथीनिस– सिकंदर की आत्मा की रक्षा के लिए बहस करते रहते थे। चापलूस और परजीवी किस्म के सिकंदर के आसपास के लोग वैसे भी केलिसथीनिस से नफरत करते थे, क्योंकि वह जवान और बूढ़े दोनों सैनिकों में लोकप्रिय था। बूढ़े लोग उसकी सादगी और संतोष के लिए उसे पसंद करते थे और जवान उसकी वाकपटुता के लिए उसके प्रशंसक थे। उसके निंदक कहा करते थे कि वह अपने को बहुत बड़ा समझता है, घमंडी है। जब भी उसे पार्टी में निमंत्रित किया जाता तो या तो वह आता ही नहीं और आ जाता तो चुपचाप बैठ जाता जैसे उसे किसी चीज से कोई मतलब ही न हो।

एक रात केलिसथीनिस को भी सिकंदर के साथ खाने पर आमंत्रित किया गया। सिकंदर ने भारी भीड़ को खाने की दावत पर बुलाया था। जाम केलिसथीनिस के पास लाया गया और उसे तुरंत एक आशु कविता बनाकर मेसिडोनियनों की प्रशंसा में सुनानी थी। केलिसथीनिस इतनी वाकपटुता से बोला कि हरेक ने जयजयकार करते हुए खुश होकर फूलों की वर्षा की। सिकंदर ने व्यंग्य किया कि इतने अच्छे विषय पर तो इतना अच्छा बोलना बहुत आसान है। उसने केलिसथीनिस को एक मुश्किल

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

चुनौती दी। उसने अब मेसिडोनियनों की कमियों पर बोलने के लिए कहा ताकि वे उन्हें कुछ ठीक करके भविष्य में और अच्छा कर सकें।

अरस्तू सच ही कहता था कि केलिसथीनिस बहुत प्रखर वक्ता था, लेकिन उसका निर्णय खराब था। केलिसथीनिस ने उनकी कमियां इतनी अच्छी तरह बयान की कि उसके बाद सब उससे नफरत करने लगे। कुछ कहते थे कि केलिसथीनिस जेल में मरा, सात महीने जंजीरों में बंधा रहा। दूसरे कहते थे कि उसे फांसी दे दी गई।

x x x x

सिकंदर भारत पर हमला करना चाहता था, लेकिन उसके सिपाही लूट के सामान से इतने लदे थे कि वे बहुत धीरे चल रहे थे। एक दिन सुबह जब सब गाड़ियां सामान से लद गईं, सिकंदर ने अपनी गाड़ी को आग लगा दी और अपने दोस्तों की गाड़ियों में भी आग लगा दी। उसके बाद उसने बाकी गाड़ियों में भी आग लगाने का हुक्म दे दिया। अबतक सिकंदर किसी भी हुक्म न मानने वाले के प्रति काफी ज्यादा दयाविहीन हो चुका था। हालांकि इससे कुछ नाराज थे, लेकिन आम तौर पर ज्यादातर फौज इस बर्बर सामान के जलने से खुश थी, क्योंकि वे अब फिर से योद्धा बन सेकेंगे।

तक्षशिला का राजा भारत के बड़े हिस्से पर राज्य करता था। जब उसने सुना कि सिकंदर आ रहा है उसने इंतजार नहीं किया और उससे शांति से खुद मिलने चला गया। कहा, "हम एक-दूसरे से लड़ाई क्यों करना चाहते हैं? अगर आपके यहां आने का मतलब हमारा पानी और हमारा खाना छीनना नहीं है? ये ऐसी चीजें हैं जिनके लिए किसी भी समझदार आदमी को लड़ना नहीं चाहिए। इसके अलावा अगर कोई और संपत्ति या अमीरी की बात है, तो मेरे पास अगर कुछ ज्यादा है तो मैं आपके साथ बांटने को तैयार हूं। लेकिन अगर भाग्य मेरी बजाय आपके साथ है तो मुझे आपका कर्जदार बनने में कोई एतराज नहीं है।"

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

इस विनम्रता से भरे शब्दों से सिकंदर खुश हुआ और उसने जवाब दिया, "क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारे विनम्र शब्द और तुम्हारा अच्छा व्यवहार हमारे बीच की लड़ाई से बचा सकते हैं? नहीं, मैं तुम्हें इतनी आसानी से बचने नहीं दूंगा। मैं तुम्हारे साथ इन शर्तों पर लड़ाई करूंगा। इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि तुम मुझे कितना देते हो, मैं तुम्हें उससे ज्यादा वापस दूंगा।" इसके बाद तक्षशिला ने बहुत अच्छे उपहार सिकंदर को भेंट किए, लेकिन सिकंदर ने उससे भी ज्यादा कीमती उपहार बदले में दिए और उसके ऊपर एक हजार सोने की अशर्फी भी दे दी। इस उदारता को सिकंदर के पुराने दोस्तों ने पसंद नहीं किया, लेकिन इसने बहुत सारे भारतीयों का दिल जीत लिया।

लेकिन राजा पोरस ने समपर्ण करने से इंकार कर दिया। वह सिकंदर को हाईदसपस नदी को पार करने से रोकने के लिए तैयार हो गया। पोरस विशालकाय आदमी था। जब वह अपने युद्ध के हाथी पर चढ़ता था तो ऐसा लगता था जैसे साधारण डील-डौल का आदमी घोड़े पर लगता है। लम्बी लड़ाई के बाद सिकंदर जीत गया। पोरस उसके सामने बंदी बनाकर लाया गया तो सिकंदर ने पूछा कि क्या व्यवहार किया जाए। पोरस ने जवाब दिया, "एक राजा की तरह।" सिकंदर ने दोबारा पूछा तो पोरस ने कहा, "जैसे एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है।" सिकंदर ने न केवल पोरस को उसके राज्य का सूबेदार बना दिया, बल्कि उसे और ज्यादा राज्य दे दिया।

यह एक महंगी विजय थी। बहुत सारे मेसिडोनियन मारे गए और उन्हीं में सिकंदर का पुराना युद्ध का दोस्त बुसिफेलस भी था। इसने सिकंदर को इतना दुख से भर दिया कि जैसे उसने बहुत पुराना दोस्त खो दिया हो। उसने उस जगह पर एक शहर बसाया जिसका नाम रखा बुसिफालिया।

22 हजार भारतीयों पर मुश्किल जीत ने (मई 326 ई.पू.) मेसिडोनियनों की कमर तोड़ दी। उनमें सिकंदर के गंगा पार करने के फैसले से कोई उत्साह नहीं था। गंगा का पाट 4 मील तक चौड़ा था।

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

यह 6 सौ फीट गहरी थी और दूसरी तरफ 2 लाख पैदल सैनिकों की फौज, 50 हजार घुड़सवार, 8 हजार रथ, और 6 हजार युद्ध के हाथी थे, जिनका मुकाबला करना था। सिकंदर उनके अनमनेपन से इतना नाराज हुआ कि उसने अपने-आपको अपने तंबू में बंद कर लिया और कहा कि अगर वे गंगा पार करने के लिए तैयार नहीं होंगे तो अभी तक जो किया उसके धन्यवाद के उत्तराधिकारी भी नहीं रहेंगे। आखिरकार दोस्तों के समझाने और सिपाहियों की प्रार्थनाओं पर सिकंदर वापस मुड़ा।

अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए उसने काठी, कवच, जो कि आकार में बहुत बड़े थे और देवताओं की पूजा के लिए बड़ी वेदियों को पीछे छोड़ दिया। नावों के बजरों पर सवार होकर उसकी सेना इंडस नदी पार कर गई।

रास्ते में वे कुछ शहरों की किलेबंदी तोड़कर उनपर कब्जा करते गए। उनमें से ही एक में सिकंदर मरते-मरते बचा। सिकंदर सीढ़ी पर सबसे ऊपर था- मालीयन शहर की दीवार पर, और फिर वह शहर में अपने दो सिपाहियों के साथ अंदर कूद गया। इससे पहले कि बाकी मेसिडोनियन उसे पकड़ पाते और बचा पाते, सिकंदर को एक तीर आकर पसलियों में लग गया और गदा की चोट से उसे चक्कर आ गया। जब उन लोगों ने उसे हटाया वह बेहोश था। डाक्टर ने तीर को काटकर निकाला। अफवाह फैल गई कि सिकंदर मारा गया।

XXXX

भारत में सिकंदर जब था तो उसने 10 ब्राह्मणों को बंदी बनाया। ये लोग जाने-माने बुद्धिमान लोग थे, इसलिए सिकंदर ने उनकी परीक्षा लेने की बात सोची। सिकंदर ने कहा, जो सबसे खराब जवाब देगा वह सबसे पहले मरेगा, और उसने बड़े बूढ़े ब्राह्मण को इस प्रतियोगिता का जज बना दिया।

■ "संख्या में ज्यादा कौन है जीवित या मृत?" सिकंदर ने पहले

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

ब्राह्मण से पूछा? ब्राह्मण ने जवाब दिया, "जीवित, क्योंकि मरा हुआ गिना नहीं जाता।"

- "किसने ज्यादा जीव-जंतु पैदा किए, समुद्र ने या धरती ने?" सिकंदर ने दूसरे से सवाल किया। "धरती ने," उसने जवाब दिया, "क्योंकि समुद्र तो उसका एक हिस्सा ही है"
- तीसरे से सवाल था, "सबसे छोटा जीव कौन है?" ब्राह्मण ने जवाब दिया, "जो हमें अभी तक मिला नहीं।"
- चौथे से सवाल था कि "भारतीयों को लड़ने के लिए प्रेरित करने के लिए उन्होंने क्या तर्क इस्तेमाल किया था?" उसका जवाब था, "या तो इज्जत से रहो या इज्जत से मरो।"
- "क्या पुराना है, दिन या रात?" पांचवें से सवाल था। जवाब मिला, "दिन कम से कम 1 दिन बड़ा है।" जब उसने देखा कि सिकंदर जवाब से संतुष्ट नहीं है तो उसने जोड़ा, "अजीब सवालों का जवाब भी अजीब होता है।"
- "एक आदमी को क्या करना चाहिए जिससे वह सबका प्रिय बने?" सिकंदर ने पूछा, और छठे ब्राह्मण ने जवाब दिया, "बिना डराए ताकतवर बनो।"
- "एक आदमी को भगवान बनने के लिए क्या करना चाहिए?" सातवें से पूछा, जिसने जवाब दिया, "ऐसा करो जो इंसान के लिए करना असंभव हो।"
- आठवें ब्राह्मण से सवाल था, "जिंदगी बलवान है या मौत?" उसका जवाब था, "जिंदगी मौत से ज्यादा बलवान है, क्योंकि उसमें बहुत सारी तकलीफ छिपी रहती है।"
- नौवें ब्राह्मण से पूछा, "किसी आदमी के लिए कब तक जीवित रहना ठीक है?" उसने कहा, ''जब लगे कि अब मरना बेहतर है, तब तक।''

इसके बाद सिकंदर जज की तरफ मुड़ा, जिसने यह तय किया

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

कि हरेक ने एक-दूसरे से खराब जवाब दिया है। "तब तुम सबसे पहले मरोगे ऐसा सही जवाब देने पर," सिकंदर ने कहा। "ऐसा नहीं श्रीमान महान राजा!'' उसने जवाब दिया, "अगर आप अपनी जबान के पक्के हैं तो आपने कहा था जो सबसे खराब जवाब देगा वह सबसे पहले मरेगा।"

सिकंदर ने सब ब्राह्मणों को उपहार दिए और आजाद कर दिया, इसके बावजूद कि उन्होंने भारतीयों को उससे लड़ने के लिए भड़काया था।

X X X X

सिकंदर को इंडस को पार करने के सैनिक अभियान में सात महीने लग गए। आखिरकार जब वह हिन्द महासागर में पहुंचा, उसने तय किया कि फौज को जहाज से ले जाने की बजाय गेडरोशियन जंगल से ले जाया जाए। (एरियन हमें बताते हैं कि सिकंदर के इस जंगल से पार जाने की वजह यह थी कि अभी तक किसी फौज ने इससे होकर पार नहीं किया था। उसे मुश्किलें पता थीं जो इसे पार करने में आने वाली थीं। उनके द्वारा लूटा गया सामान भी उन्हें पीछे छोड़ना था, क्योंकि उनके पास ढोने वाले जानवरों की कमी थी। ज्यादातर जानवर प्यास की वजह से मर गए थे। जो भी साथ चलने

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

की स्थिति में नहीं रहा, पीछे मरने के लिए छोड़ दिया गया। आखिर में उन्हें पानी मिला और उन्होंने उसके पास पड़ाव डाला, तभी मानसून की बारिश ने एकदम बाढ़ ला दी जिसमें सभी महिलाएं और बच्चे डूब गए और बचे हुए जानवर भी डूब गए। सिर्फ कुछ फौजी जो जंगल में जा सके, वही बचे (यह घटना 325 ई.पू. की है)। 60 मुश्किल भरे दिनों के बाद, वे गेडरोशिया पहुंचे, जहां उन्हें खाने और पीने को काफी मिला। उस जंगल में बहुत लोग मारे गए। 1,20,000 की फौज और 15,000 घुड़सवारों में से, जिन्हें सिकंदर अपने साथ भारत के लिए लेकर चला था, एक चौथाई ही वापस आ पाए।

भारत में उसकी मुसीबतों की खबरें, मौत से भिड़ंत, फौज के बड़े हिस्से का जंगल में खत्म हो जाना– इन सब चीजों ने हारे हुए देशों में बगावत के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया। पीछे जो राज्यपाल और कमांडर उसने राज्य का शासन चलाने के लिए छोड़े थे, वे सोचने लगे कि वे जो चाहें कर सकते हैं। यहां तक कि मेसिडोनिया में सिकंदर की मां ने उस आदमी को अपदस्थ कर दिया जिसे उसने गवर्नर बनाया था। लेकिन सिकंदर अभी भी नए आविष्कार करते रहना चाहता था। इस बार उसने अफ्रीका का चक्कर लगाकर पिल्लरस ऑफ हरकुलस (जिबरालटर) तक समुद्री यात्रा का सुझाव रखा।

सायरस की कब्र को मेसिडोनियनों में से एक ने लूट लिया। सिकंदर ने इसके लिए उस लूटने वाले को फांसी की सजा दे दी। कब्र पर लिखा था, "तुम कोई भी हो, और कहीं से भी आए हो (मैं जानता था कि तुम आओगे) मैं साइरस हूं, ईरानी साम्राज्य को बनाने वाला। कृपया इस मिट्टी को, जिसने मेरी लाश को ढंका है, रहने दो।" इस इबारत ने सिकंदर को बहुत ज्यादा परेशान कर दिया। इस उदाहरण से उसे लगा कि इंसान की प्रसिद्धि कितनी क्षण-भंगुर है। ठीक इसी समय केलानस (उन ब्राह्मणों में से एक, जो सिकंदर के साथ भारत से चले थे) ने कहा कि उसको अपने अंतिम संस्कार की चिता बनानी है। जब सब तैयार हो गया केलानस ने अंतिम संस्कार के सारे जरूरी रीति-रिवाज किए। फिर मेसिडोनियन दोस्तों को अलविदा कहा। उसने

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

उनसे कहा कि सिकंदर को कहना कि केलानस जल्दी ही बेबीलोन में मिलेगा। फिर वह चिता पर चढ़ गया, चिता जलाई और शांत बैठा रहा जब तक कि वह राख न हो गया।

उस रात सिकंदर ने अपने दोस्तों और अफसरों के साथ रात का खाना रखा और कहा, जो सबसे ज्यादा शराब पिएगा उसके लिए इनाम रहेगा। पेरोमाचस ने 12 पहवे पीए और इनाम जीता। लेकिन तीन दिन बाद वह मर गया, इकतालीस और लोग इससे मरे।

x x x x

सूसा में (324 ई.पू.) सिकंदर ने राजा डेरियस की लड़की स्टारिरा को अपनी एक पत्नी बना लिया। ठीक उसी समय उसने ईरान की बहुत अच्छे परिवारों की महिलाओं के साथ अपने दोस्तों का विवाह करवाया।

ये शादियां इकट्ठे एक बड़े विशाल त्यौहार के तौर पर संपन्न हुईं जिसमें नौ हजार मेहमान थे। इसमें हरेक को सोने का कप दिया गया। सिकंदर ने सिपाहियों का भी सारा पैसा दे दिया जिसमें करीब 10,000 टेलैण्टस लगे।

जब सिकंदर भारत के लिए चला था तो उसने 30 हजार ईरानी लड़कों को यूनानी फौज के लिए चुना था। वे अब तक मजबूत और अच्छे योद्धा बन चुके थे। उन्होंने अपनी फौजी ट्रेनिंग का प्रदर्शन किया जिससे सिकंदर प्रसन्न हुआ। लेकिन मेसिडोनियन इससे दुखी हुए, क्योंकि अब तक वे मानने लगे थे कि "अब सिकंदर के लिए हमारी कोई साख नहीं रह गई है।"

जब सिकंदर ने कुछ घायलों और कुछ बीमार लोगों को मेसिडोनिया लौटने की इजाजत दे दी तो दूसरे यूनानियों को भी जाने के लिए कहा गया। उन्होंने जोड़ा कि सिकंदर को उनकी सेवाओं की जरूरत नहीं है, क्योंकि उसके पास ईरानी चुस्त लड़कों का बड़ा अच्छा दस्ता है जिनके साथ वह विश्व को जीतने जा सकता है। इससे सिकंदर इतना

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

क्रुद्ध हो गया कि उसने उत्तेजनापूर्ण और गालियों से भरा एक लम्बा भाषण दिया, अपने सब गार्डों को मार डाला और उनकी जगह सभी ईरानियों को रख दिया। इसके थोड़े ही दिन बाद, यूनानियों ने पछताना शुरू किया। वे 2 दिन, 2 रात सिकंदर के तंबू के बाहर खड़े रहे, जबतक कि सिकंदर नर्म न पड़ गया, और उनके काम के लिए इनाम तय कर दिया।

सिकंदर इकबताना के लिए चलता रहा, जहां उसने अपने साम्राज्य के कुछ मामलों को देखा। फिर जनता के साथ दर्शक बनकर शांति से मजे लेने लगा। तीन हजार अभिनेता और कलाकार यूनान से उसका मनोरंजन करने आए थे। लेकिन सिकंदर की खुशी ज्यादा लम्बी नहीं चली, क्योंकि उसका सबसे अच्छा दोस्त हिफिएशटन बुखार से चल बसा।

सिकंदर का हिफिएशटन के जाने का दुख सारी सीमाएं तोड़ गया। जिस डॉक्टर ने उसका इलाज किया था उसे फांसी पर चढ़ा दिया। (डाक्टर की गलती नहीं थी, सिर्फ यह कि वह मरीज को छोड़कर नाटक देखने चला गया। हिफिएशटन ने उस मौके का फायदा उठाकर परहेज तोड़ दिया और एक पूरा चिकन खा गया और खूब सारी शराब पी ली। इससे बुखार बिगड़ गया और वह जल्दी मर गया।) सिकंदर ने हुक्म दिया कि शोक में उसकी फौज के सभी जानवरों के बाल और पूंछ काट दी जाएं। उसने आसपास के शहर की दीवार गिरवा दी। सारा संगीत बंद कर दिया। फिर वह कोसिया देश में गया और बिना किसी कारण पूरे देश में कत्लेआम कर दिया।

हिफिएशटन की कब्र पर बना ताबूत अद्‌भुत और अद्वितीय था। यह ताबूत उसकी याद में बनाया गया था। सिकंदर अपना ज्यादातर समय वास्तुकार के साथ उसके बारे में बात करते हुए ही बिताता। बेबीलोन के रास्ते में एक वहीं के निवासी भविष्यक्ता ने बताया कि अगर उसने शहर में प्रवेश किया तो मर जाएगा। लेकिन सिकंदर ने कोई ध्यान नहीं दिया। जैसे ही वह दीवार के पास आया उसने देखा

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

Download Great Books @ www.hindisahityadarpan.in

कुछ कौवे आपस में लड़ाई कर रहे थे। फिर उसके पास ही कुछ गिरा। इतना बड़ा अपशकुन होना भी सिकंदर को बेबीलान में जाने से नहीं रोक पाया।

बहरहाल, दूसरे अजीबोगरीब अपशकुनों की ओर सिकंदर का ध्यान गया। एक गधे की लात खाकर उसका सबसे ताकतवर शेर मर गया, और एक दिन सिकंदर के सिंहासन पर एक आदमी गहरा ध्यान लगाकर बैठा पाया गया। इसके बाद सिकंदर का विश्वास भगवान और दोस्तों दोनों से उठ गया। एक बार उसने इस तरीके की अप्राकृतिक शक्तियों के डर को अपने ऊपर हावी होने दिया तो फिर छोटी-सी चीज से भी इस तरह डरने लगा जैसे पता नहीं उसका कितना महत्व है। भविष्यवाणी करने वालों और पुजारियों की भीड़ दरबार में जमा होने लगी। दैवी शक्तियों की अवमानना मनुष्य को दयनीय बना देती है और ऐसा ही अंधविश्वास के साथ है। कुंठित दिमाग में डर और मूर्खतापूर्ण विचार ऐसे भर जाते हैं जैसे पानी रिसकर मिट्टी के बर्तन में भर जाता है।

सिकंदर ने बहुत ज्यादा शराब पीनी शुरू कर दी और उसे बुखार हो गया। बारह दिन बुखार में तपने के बाद उसकी बेबीलोन में (जून 10, 323 ई.पू.) मृत्यु हो गई। ●

Read Inspirational Hindi Stories,Self-Development Articles,Best Quotations,Chankaya Neeti,Vidur Neeti, Bhartrihari Neeti Shatak,Inspirational Poems and much more @ www.hindisahityadarpan.in

हमारी पूरी कोशिश है कि आपको हिंदी की अधिकतम पुस्तकें मुफ्त उपलब्ध करायी जायें और इन्टरनेट पर हिंदी की उपस्थिति को अधिक से अधिक बढ़ाया जाए | इसी क्रम में मैं आपके सामने एक से एक अधिक पुस्तकें प्रस्तुत कर रहा हूँ |

परन्तु जैसा कि आप जानते हैं इंटरनेट पर किताबें अपलोड करने , उन्हें हमेशा उपलब्ध रखने , तथा साईट अच्छी तरह और सरल रूप से काम करे इसके लिए अत्यंत मेहनत के साथ साथ संसाधनों की भी आवश्यकता होती है , और यही वह कारण है जिसकी वजह से अभी तक हिंदी भाषा की कोई भी वेबसाइट एक दो साल से ज्यादा नहीं चली है और बहुत ही अल्प समय में एक से एक अच्छी वेबसाइट बंद हो चुकी हैं |

यह चुनौती हमारे सामने भी है , लेकिन एक विश्वास भी कि हिंदी के जागरूक हो रहे पाठकों को इस समस्या के बारे में अंदाज़ा है और वे इस बारे में केवल मूकदर्शक नहीं है | हम आपको हिंदी की पुस्तकें देंगे , हिंदी में जानकारी देंगे और बहुत कुछ देंगे और हमें आशा है कि आप भी हमे बदले में अपना प्यार देंगे और हमारी मदद करेंगे हिन्दी को सम्म्रद्ध बनाने में |

अपना हाथ बढाइये और हमारी मदद कीजिये | मदद करने के लिए जरूरी नहीं है कि आप पैसे या आर्थिक मदद ही करें , आप जिस तरह चाहें उस तरह हमारी मदद कर सकते हैं | हमारी मदद करने के तरीकों को आप यहाँ देख सकते हैं |

आशा है आप हमारी सहायता करेंगे |

अगर आपको हमारा प्रयत्न पसंद आया हो तो सिर्फ 500 रू. का सहयोग करे| आपका सहयोग हिंदी साहित्य को अधिक से अधिक विस्तृत रूप देने में उपयोगी होगा | आप Paypal अथवा बैंक ट्रान्सफर से सहयोग कर सकते हैः | अधिक जानकारी के लिए मेल करें preetam960@gmail.com अथवा यहाँ देखें

धन्यवाद